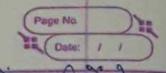
TDC PARTILL, HISTORY (HOW), PAPER-VI अमिल कुमार इतिहास विभाग, अप्रविक्री क्यार कॉलेज महाराजगीज (स्वान) स्तीवस्य उद्योग एवं जूट उद्योग (शेष भाग)

जूट उद्योग भारत में 1855 से जूर निर्माण प्रारंभ हुआ। इसी वर्ष सिरामपुर के निकट केगल में जार्ज आईलेंड ने एक ज्वट मिल रतही की और जूट निमीण अहर विमा । वटा जूट मिल उट्योग स्थापितकारने वि सारी अनुकुल परिविधितें विष्यमान थीं। मजदूर, पटयन वकच्या माल की याला आदि प्राचुर मात्रा में उपालक्या थे। किर भी मशीनरी तकनीकी ज्ञान एवं प्रक्षित भ्रम के बारे में उत्योग उनपने विकास के प्रारम्भिक काल में लेकाश्रामर पर निर्मर था। वाकात कि विकास के अवस्था 1859 की देश में पहला

ज्यर पावर्ष्य रचापित किया गया। जूर में भात का स्कारियकार बना रहा और केंगाल के जूट उच्चोंग की लहुत लाम पहुँचा। इसने नवीन मिलों व्यो र्वापना की प्रीत्सादित किया। 1874 ई में पांक मिले स्तादी गई।इए प्रकार 1882 तक देश में 20 जूट की मिलें हो गई जिनमें 20,000 व्यक्ति काम क(ते थे। इनमें से 18 मिलें लेगाल में और 14 कलकता के समीप कारकार में किला के स्थान का में किला के निर्देश के निर्म के निर्देश के निर्दे

1884 से 1895 ईए तक जूट मिलों की शिल्या २५ छ व्यक्कर २१ ही गई जिसमें 75,157 व्यक्ति कार्धरत थी। 1905-06 में इस उत्लोग में मेदी आई। 20 ती अताहरी के प्रारंभ में जूट मिलों का विकास मुख्यतः कलकता के नजहीं रहा । जूर का निर्यात भी छढ़ गया। 1913 में मिली की शिल्या बदकर 64 ही गई।

प्राम विश्वयह काल में जूर उद्योग ने सरकारी आदेशी के आप्तार पर कार्य किया ।इस समय करेरो जूर का उपभीन आरतीय जिली में 1913 में 44 लात गाँहीं से वदकर 50 लाख गाँहें ही ग्रामा और करमे जूर का किशीत स्टारकर 1917-1918 में 17 साव जां हे हो गया। 1916 में नियात कर लगाया गया जिसे 1917 में-वहाया गमा। इससे काणा की नुकसान पहुंचा, क्यों हि भारतीय उद्योगी की एकाधिकार पात था। इस अविधा में जूर का मूलम नहीं जहा



और मजदूरी भी कम हो गई। प्रथम तिश्व गुरू काल में जूट मिलों ने रवन लाभ अर्जित किया। 1914-15 में मिलों की श्रील्या में से लहकर 1929-30 में 98 वर्षेत्री का विनियोग 18 करोड़ रूपये ही गया।

अद्दोतर लहीं में कच्चे एकं निर्मित जूट का निर्मित ज्ञान मुल्य, निर्मा मजदूरी रुकं प्रशासकीय उपादेशों के कारण विधा मजा। 1915-25 के बीच जूट मिलों ने अपनी पूंजी पर 90% लार्षिक लाभ आर्जित किया। 1935-36 में जूट मिलों की संख्या 104 व चूंजी विनियोग 20 की विभाग कार्यर क्या की प्रभावित की मांग कार्यर की जाई।

1938-39 में मिली की र्शिल्या 107 की जिसकी प्रदत्त पूर्जी 20 करोड रवपमे भी निली की र्शिल्या में तृहि होने पर उटपादन में उगाशातीत सहि हुई। जुलाई, 1939 में प्रक समकीते के अन्तर्गत जिल ने पड रिटे प्रति एपाह काम काना निक्रियत किया। उप्योग का उनसंतोषप्रद राष्ट्रण उसका निदेशी प्रवेद्या था एवं उत्पादन की से पूर्ण प्रक्रिया की जानने हेतु भारती थीं की प्रशिक्षण देने की भी जना का अभाव था।

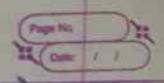
उसी समय 1939 में दितीय विश्वयुट्ट अपूर्व तो अमा।

युट्ट बिड्डिन से ज्रूट की मांग वह गई। फलतः मिली ने ६० बंटे प्रति
साताह काम कार्ना क्षुरू किया। मासिक उत्पादन में उत्पक्षातित वृद्धि

इद्दे। युट्ट काल में उत्योग के विस्तार की सीमा वाजार की हानि तथा

जहाजरानी की किनाइशों के कारण बनी रही। फलतः युट्ट काल में

भी उत्योग का विकास सीमित रहा। लाम अबिक होने का प्रमुख काण 
यह था कि निर्मित माथ एवं कच्नी ज्रुट के माल के मूल्यों में काप्मी
अन्तर था। शुट्ट काल में ज्रूट मिली की साला 1938 39 में 107 दी



लबकर 1995-पर में 111, किएसी मी सीरमा हम, 939 से बहुत । तथा तकुमों की क्षीरमा 1,350,465 से बहुकर 1,444,863 से मही। देश विभागन में जूट उद्योग की बहुत

प्रभावित विशा । जूट मिलें आहत में रही जाना है है। का कि है का जूट पार्मितान के कार आहत । व लात की पार्मितान के हैं लात जाति का उत्पादन कहता का। आहतीर जूट उप्योग की में का लात गाँहें लाहिक कहते जूट की आवश्यमता भी। किंतु आहत ने 1447-48 में 15 कि लाहिक कहते जूट की आवश्यमता भी। किंतु आहत ने 1447-48 में 15 कि लाहि जाही का उत्पादन कि गा । पार्मितान पर कहते जूट के लिए निलें रहें के लिए में रहकावट आने से जूट विलीं का उत्पादन आहत में 1947-48 में 1955,000 टन से जिएकर 1950-51 में 8,92,000 टन हो जाता तथा जूट माल का निशीत 8,72,000 टन से जिएकर 6,50,000 टन से जाता है।